AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

डॉ. अम्बेडकर का सामाजिक न्याय

ORIGINAL ARTICLE

Author
डॉ. शैलेन्द्र पाठक,
विभागाध्यक्ष–इतिहास
शा.छत्रसाल महाविघाालय
पिछोर–शिवपुरी, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

डॉ. अम्बेडकर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से पद दलित लोगों के लिए समर्पित विद्रोही नेता थे। संविधान और विधिक क्रांति को समझने वाले लोग उन्हें सामाजिक न्याय का मसीहा और सामाजिक दासता के कट्टर शत्रु के रूप में स्मरण करते हैं।

मुख्य शब्द

छुआछुत, पुरूषार्थ, अस्पृश्यता, अविष्मणीय।

सामाजिक स्तर पर छुआछुत की समस्या को लेकर आधुनिक युग में राजाराम मोहन राय से लेकर महात्मा गांधी जी तक अनेक विचारको और समाज सुधारको ने संघर्ष किया हैं पर डॉ. अम्बेडकर का संघर्ष इन सबसे अधिक गहरा और बुनियादी था। जहाँ अन्य सामाजिक और राष्ट्रीय आधार पर हल करने के प्रयत्न किए, वही डॉ. अम्बेडकर के लिए यह समस्या अधिक गहरी और तीखी थी। उन्होने इस समस्या की वेदना को भुगता था क्योंकि वे अछूत वर्ग के थे। उन्होने इस बात को स्वयं अनुभव किया था कि भारतीय समाज रचना में इतनी विकृतियां आ गई हैं कि शिक्षा ज्ञान और पुरूषार्थ के होते हुए भी केवल अछूत परिवार में जन्म लेने के कारण व्यक्ति का समाज के किसी भी क्षेत्र में कोई महत्व नहीं हैं। वह पूर्णतः उपेक्षित हैं। अतः डॉ. अम्बेडकर ने दलितों के उद्धार का और उसमें आत्मसम्मान के भाव को विकसित करने का अथक प्रयत्न किया।

उन्होनें भारतीय जीवन के ऐसे कई उदाहरण प्रस्तुत किए जिनके द्वारा उन्होने यह सिद्ध किया कि भारत के सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करने में तथा भारत को सांस्कृतिक गौरव दिलाने में उन साथियों का बड़ा योगदान रहा हैं जो तथा कथित निम्न जातियों में पैदा हुए, इनमें वशिष्ठ, व्यास प्रमुख हैं।

उन्होनें सामाजिक न्याय की प्राप्ति के लिए जाति और वर्ण व्यवस्था पर कठोर प्रहार किया क्योंकि जाति और वर्ण दोनों ही में समाज में कट्टरता को जन्म दिया हैं। इनके परिणामस्वरूप ही समाज में कालान्तर में जाकर अस्पष्ट डॉ. अम्बेडकर सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टि से पद दलित लोगों के लिए समर्पित विद्रोही नेता थे। संविधान और विधिक क्रांति को समझने वाले लोग उन्हें सामाजिक न्याय का मसीहा और सामाजिक दासता के कट्टर शत्रु के रूप में स्मरण करते हैं। समाज में अस्पृश्यता का भाव पैदा हुआ तथा उपेक्षा, शोषण और अत्याचार की बहुत बड़ी परम्परा का विकास हुआ जिसका प्रारम्भ से ही महापुरूषों जैसे गौतम बुद्ध, कबीर, महावीर आदि से लेकर वर्तमान युग में राजा राम मोहन राय, दयानन्द सरस्वती आर्य समाज के अनेक व्यक्तियों व संगठनों ने विरोध किया परंतु डॉ. अम्बेडकर के विरोध का आधार इन सबसे अधिक व्यापक था। उन्होनें केवल सामाजिक और मानवीय

आधार पर अस्पृश्यता का विरोध नहीं किया बल्कि प्राचीन साहित्य, संस्कृति और व्यवस्था का पूर्ण अध्ययन और विश्लेषण कर जनमानस के सम्मुख ऐसे तथ्यों को उदघटित किया, जिनसे यह सिद्ध होता है कि भारतीय संस्कृतिक विकास में केवल स्वर्ण लोगों का ही योगदान नहीं हैं अपितु अछुत कहे जाने वाले वर्ग का योगदान भी अविस्मरणीय हैं।

उनके अनुसार न्याय सामान्यतया स्वतंत्रता, समानता और मातृत्व का दूसरा नाम हैं। मूलतः उनकी सामाजिक न्याय की अवधारणा का यही आधारभूत विचाार हैं। उनकी सामाजिक न्याय की धारणा एक ऐसी जीवन पद्वति हैं जिसके अनुसार समाज के प्रत्येक व्यक्ति को उचित स्थान मिलना चाहिए। यहां उचित स्थान का तात्पर्य जन्म आधारित सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं है, इसका सीधा सादा अर्थ वह योग्यता का गुण है जिसके अनुसार सभी को सही सामाजिक प्रतिष्ठा मिले।

इनकी सामाजिक न्याय की अवधारणा के मूल तत्व है। समस्त मानव प्राणियों की समानता, स्त्री पुरूष की समान प्रतिष्ठा, कमजोर एवं निम्न जाति के लोगों के प्रति सम्मान की भावना, आर्थिक खुशहाली, समान मानव अधिकार के प्रति निष्ठा, पारस्परिक प्रेम, सहयोग तथा सामाजिक सद्भाव की प्रचुरता, धार्मिक सहिष्णुता एवं सहयोग अन्य नागरिकों के प्रति बन्धुत्व भाव, मानवीय व्यवहार, सभी नागरिकों को शिक्षा एवं सम्पति का अधिकार, सामाजिक न्याय की यह धारणा विधि के शासन तथा समान नागरिक संहिता को आधार मानता हैं। भारतीय परिवेश में अम्बेडकर जी ने भातृत्व पर सर्वाधिक बल दिया।

न्याय के सभी पक्षों में सामाजिक न्याय पर ही डॉ. अम्बेडकर ने इसलिए बल दिया क्योंकि उनके विचार में सामाजिक न्याय ही न्याय की विराट धारणा हैं जिसमें विधि का आर्थिक राजनैतिक, धार्मिक, प्राकृतिक सभी न्याय समाविष्ट हैं। सामाजिक न्याय सम्पूर्ण समाज की सीमाओ को स्पर्श करता हैं और उसमें रहने वाले समस्त नागरिकों को बंधत्व में बांधने का प्रयास करता हैं।

निष्कर्ष

डॉ. अम्बेडकर साहब दलितों के प्रमुख तथा सम्पूर्ण समाज के मान्य नेता थे। उन्होनें समाज में व्याप्त विकृतियों का हमेशा विरोध किया। उन्होनें जोर देकर कहा कि जब तक दलितों का शोषण होता रहेगा, तब तक समाज पूर्ण रूप से विकास नहीं कर सकता। उन्होनें परिस्थितियों का ऐतहासिक और वैज्ञानिक विश्लेषण किया तथा अनेक अंधविश्वास को मिथ्या सिद्व किया। उन्होनें अपने प्रयत्नों से सामाजिक जागृति को विकसित किया जिसके परिणामस्वरूप दलितों के हित में वातावरण निर्मित हो सका। समाज अनुभव करने लगा कि दलितों का शोषण, अमानवीय और अनैतिक हैं। उन्होनें सामाजिक और देश की एकता को सर्वोपरि माना।

संदर्भ सूची

1. Introduction to the constitution of India -D.D Basu
2. Political Theory -EDDY Asirratham, Page 26.
3. आधुनिक भारत का इतिहास.–वी.एल गोपाल पृष्ठ. 171
4. ई.एच.कार–पुष्ठ. 21
5. ई.एच.कार–पुष्ठ. 14

––==00==––